वास्तुशास्त्रीय त्रैमासिक प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम

(Three Month Certificate Course in Vastu Sastra)

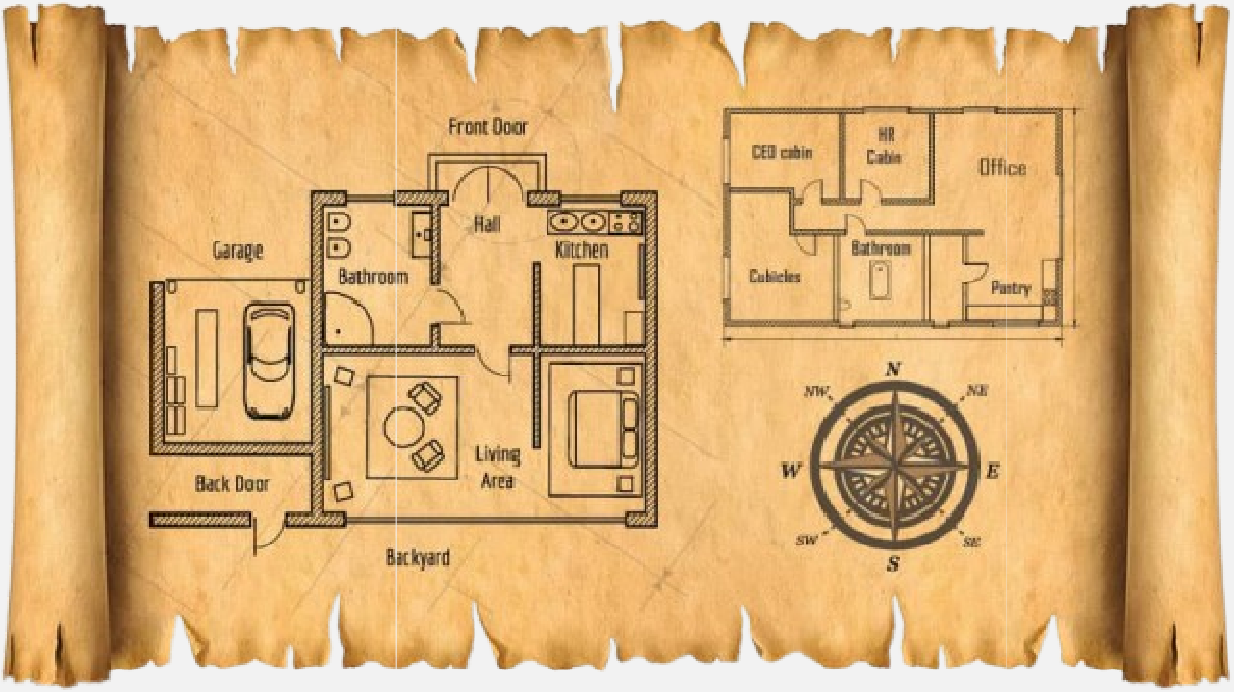

ऑनलाइन संस्कृत प्रशिक्षण केन्द्र

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

पाठ्यक्रम समन्वयक

डॉ. मधुसूदन मिश्र

सहायक आचार्य – ज्योतिषविभाग

पाठ्यक्रम परिचय

भारत में प्राचीन काल से ही वास्तुशास्त्र को विशेष महत्व दिया गया है। यहां के वास्तुकला जैसे कोणार्क का सूर्य मंदिर, पुरी का जगन्नाथ मंदिर, गुजरात का सोमनाथ मंदिर, अजंता, एलोरा आदि ने समस्त विश्व को अपनी ओर आकर्षित किया है। विश्व के सबसे प्राचीन ग्रंथ वेदों में इसका प्रमाण मिलता है। वेदों के उद्भव के बाद वेदांगों की रचना की गई। इनमें वेदांगों में ज्योतिष शास्त्र के अंतर्गत वास्तुशास्त्र को विशेष स्थान दिया गया।

इस शास्त्र का महत्व इस बात से भी परिलक्षित होता है कि इसे उपवेद के रूप में स्थान मिला। प्राचीन भारतीय वास्तु शास्त्र तीन भागों में परिलक्षित होता है। प्रथम देवालय वास्तु, द्वितीय नगर वास्तु तथा तृतीय आवासीय वास्तु। नगर वास्तु के अंतर्गत नगर निर्माण के सिद्धांतों को महत्व दिया जाता है, वहीं देवालय वास्तु में मंदिरों के निर्माण एवं इसके बनावट तथा शिल्प के संदर्भ में विचार किया जाता है। आवासीय वास्तु मनुष्य के निवास स्थान को पंच तत्वों के अनुकूल बनाने का एक माध्यम है।

आचार्यों ने मानव के निवास स्थान को विशेष महत्व देते हुए पंच तत्वों के साथ समन्वय कर इसे स्थापित करने की दिशा में विशेष प्रयास किया एवं इसके ज्ञान पर विशेष बल दिया। यदि वास्तु अनुकूल हो यानी पंच तत्वों के साथ गृह का समन्वय उत्तम हो तो गृह निश्चित ही सुख एवं समृद्धि तथा उत्तम स्वास्थ्य को देने वाला होता है, परंतु वास्तु की अज्ञानता के कारण यदि गृह में पंच तत्वों का समन्वय सही प्रकार से ना किया जाए तो विविध प्रकार की समस्याएं मानव जीवन में उत्पन्न होती है।

वास्तु शास्त्र के इस पाठ्यक्रम में इन्हीं बिंदुओं पर बल देते हुए प्रत्येक जनमानस को इससे परिचित कराने के लिए तथा इसके मुख्य अवयवों के ज्ञान के लिए इस पाठ्यक्रम का निर्माण किया गया है।

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

वास्तुशास्त्र प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम के निम्नलिखित उद्देश्य हैं -

1- वास्तुशास्त्र के प्रति जनजागरुकता उत्पन्न करना ।

2- वास्तुशास्त्र के व्यावहारिक पक्षों से जन सामान्य को लाभान्वित करना।

3- वास्तुशास्त्र के प्रति विद्यमान भ्रामक अवधारणाओं को दूर करना ।

4- वास्तुशास्त्र के वैज्ञानिक पक्षों को भारतीय ज्ञान परम्परा के अनुरूप विश्व पटल पर स्थापित करना ।

पाठ्यक्रम संरचना

वास्तु विज्ञान विषय के अन्तर्गत –

1– त्रैमासिक, षाण्मासिक एवं वार्षिक पाठ्यक्रम संचालित होंगे।

2– त्रैमासिक एवं षाण्मासिक प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम होंगे।

3– वार्षिक पाठ्यक्रम डिप्लोमा पाठयक्रम होगा।

4– त्रैमासिक, षाण्मासिक एवं वार्षिक पाठ्यक्रम में क्रमशः कुल 45, 90 एवं 180 कालांश होंगे।

5– पाठ्यक्रम में कालांश की अवधि एक घंटे की होगी।

7– सप्ताह में पांच कार्य दिवसों में सांयकाल निर्धारित समयानुसार कक्षायें ऑनलाइन संचालित होंगी।

।। त्रैमासिक प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम ।।

(Three Month Certificate Course)

कुल कालांश – 45 कालांश (घंटों में)

पाठ्य विषयवस्तु	कालांश (घंटों में)
➢ वास्तुशास्त्र का परिचय ➢ वास्तुशास्त्र के भेद ➢ वास्तुशास्त्र का महत्व	०२
➢ वास्तुशास्त्र के प्रर्वतक आचार्य ➢ वास्तुशास्त्र के प्रमुख ग्रन्थ	०२
➢ वास्तुशास्त्र के वैज्ञानिक पक्ष	०२
➢ वास्तुशास्त्र में विविध मापन इकाई	०३
➢ वास्तुशास्त्र में दिग्देश एवं काल विचार	०४
➢ वास्तुशास्त्रोपयोगी पंचांग परिचय	०४
➢ भूमिचयन के विविध सिद्धांत ➢ शुभ एवं अशुभ भूमि का वर्गीकरण	१०
➢ भूमि शयन विचार	०१
➢ भूमिदोष विचार ➢ भूमिदोष शोधन	०४
➢ काकिणी विचार	०२
➢ वास्तुशास्त्र के अनुसार आभ्यन्तर कक्ष विन्यास	०२
➢ वास्तुशास्त्र के अनुसार बाह्य विन्यास	०२
➢ वास्तुशास्त्र के अनुसार द्वार, सोपान एवं वेध विचार	०३
➢ शिलान्यास, गृहारम्भ एवं गृहप्रवेश मुहूर्त विचार	०४

संदर्भ ग्रंथ

बृहद्वास्तु माला

बृहद्संहिता

मयमतम्

मुहूर्तचिंतामणि

वास्तुरत्नाकर

भारतीय वास्तुशास्त्र

वास्तुराजवल्लभ

भारतीय ज्योतिष